वाराणसी नगर में जनसंख्या तथा आवास वृद्धि

रमेश कुमार वर्मा
अनुसंधान अधिकारी,
जनजातीय कार्य मंत्रालय,
नई दिल्ली

आर. एस. यादव
प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी

सारांश

जनसंख्या में परिवर्तन धनात्मक व ऋणात्मक दोनों रुप में देखने को मिलता है। वाराणसी नगर में निवास करने वाली जनसंख्या यहाँ के क्षेत्रीय स्तर पर भौतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होती है। उत्तम स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की उपलब्धता, उपयुक्त जलवायु, शुद्ध पेय जल की उपलब्धता, सुगम व सरल यातायात एवं संचार व्यवस्था, मूलभूत अवस्थापनात्मक संरचना की मौजूदगी जनसंख्या वृद्धि में सहायक होती है। विकासशील राष्ट्रों में जनसंख्या वृद्धि दर विकसित राष्ट्रों की तुलना में अधिक रहती है। जनसंख्या वृद्धि क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक घटना क्रम का आईना होती है। जनसंख्या वृद्धि का अर्थ किसी क्षेत्र में एक निश्चित समयावधि में निवास करने वाली जनसंख्या में परिवर्तन से है। यह शोध पत्र सरकारी एवं गैर सरकारी स्रोतो से प्राप्त नवीनतम द्वितीयक आकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है, और समीचीन आकड़ों एवं मानचित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इस अध्ययन में वाराणसी नगर के विगत 100 वर्षों की जनसंख्या वृद्धि के प्रतिरूप को जानने का प्रयास किया गया हैं।

मुख्य शब्द : जनसंख्या वृद्धि, वृद्धि परिवर्तन, सेवा केन्द्र।

प्रस्तावना

भारत विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। एक अनुमान के अनुसार सन् 2030 तक भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन जाएगा। किसी भी देश की जनसंख्या वृद्धि की उपनति उसके आर्थिक विकास स्तर, सामाजिक जागरुकता, सांस्कृतिक आधार, ऐतिहासिक घटनाक्रम इत्यादि का सूचक होती है। जनसंख्या वृद्धि का तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित अवधि में निवास करने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन से है। वास्तव में जनसंख्या वृद्धि उच्च जन्मदर और निम्न मृत्यु दर तथा प्रवजन की अपेक्षा अधिक आव्रजन जैसे जनांकिकीय तथ्यों पर निर्भर है। विकासशील राष्ट्रों में स्वास्थ्य योजनाओं को लागू करने हेतु लक्ष्य का निर्धारण किया गया है जिससे क्षेत्र की जनसंख्या के अनुपात में चिकित्सक, नर्स, शैय्या आदि स्वास्थ्य घटकों की उपलब्धता हासिल की जा सके। इस योजना की सफलता के लिए लोगों की सामाजिक.आर्थिक दशा और सांस्कृतिक कारक एवं लोगों की सेवा के प्रति जागरुकता स्वास्थ्य सेवाओं के ग्रहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में इन योजनाओं की सफलता लोगों के अपने जीवन स्तर तथा उनके सामाजिक.आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश पर निर्भर करता है। जनसंख्या की द्रुतगामी वृद्धि के अनुपात में जीवन की उपयोगी मूलभूत सेवाओं का लोगों तक प्राप्त न होना, उनके जीवन को काफी कष्टप्रद बना देता हैं। स्वास्थ्य सेवा इन्हीं मूलभूत सेवाओं में से एक है, जिसके अभाव में समाज में बेरोजगारी, निर्धनता, बिमारी आदि फलती है जिससे लोगों तथा समाज में असन्तोष की भावना का जन्म होता है। परिणामस्वरुप राष्ट्र विकास की गति पीछे घटने लगती है। जनसंख्या के वृहद परिमाण को ध्यान में रखते हुए केन्द्र और राज्य सरकारों ने अपने स्तर पर सबको स्वस्थ्य एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करने हेतु कई प्रकार के प्रयास किए हैं, जिससे देश एवं राज्य विकास के पथ पर अग्रसर हो सके। राष्ट्र के विकास में स्वस्थ्य नागरिकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का विवेकपूर्ण आधार पर स्वास्थ्य सेवाओं की उपयोगिता को समझना और उपयोग करना उनके सामाजिक.आर्थिक और सांस्कृतिक तत्वों पर आधारित होता है। क्षेत्र के लोगों की आर्थिक अवस्था उनकी सरकारी और गैर सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं की उपभोगिता से सम्बंन्धित है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वाराणसी नगर की जनसंख्या का आकलन करने के साथ जनसंख्या के वृहद परिमाण पर प्रकाश डालना है।

आंकड़ा आधार एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में जनगणना हस्त पुस्तिका वारणसी, 1951, 1961, 1971, 1981, 1991, एवं जिला जनगणना कार्यालय से संगणित 2001 व 2011 भारत की जनगणना से प्राप्त ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के विश्लेषण हेतु सामान्य सांख्यिकीय एवं मानचित्रण विधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष तक पहुॅचने के लिए विभिन्न व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं द्वितीयक सूचनाओं को आधार बनाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

वाराणसी शहर भौगोलिक दृष्टि से गंगा घाट के पश्चिम में स्थित है। इस क्षेत्र का विस्तार 25^0 14′ से 25^0 23′ 5′′ उत्तरी अक्षांश एवं 82^0 56′ से 83^0 03′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। शहर का कुल क्षेत्रफल 6819.92 हेक्टेयेर है। शहर रेल मार्ग के द्वारा कोलकाता (696 किमी.), मुम्बई (1,505 किमी.), दिल्ली (797 किमी.) और इलाहाबाद (143 किमी.) से जुड़ा है। शहर को महानगरपालिका परिषद द्वारा 90 वार्ड में विभाजित किया गया है। शहर की समुद्रतल से सामान्य ऊँचाई 77 मीटर है। दक्षिण भाग में अस्सी धारा का क्षेत्र 72 मीटर सबसे न्यूनतम है और सबसे अधिक 83 मीटर ऊँचाई वरूणा गंगा संगम स्थल की है।

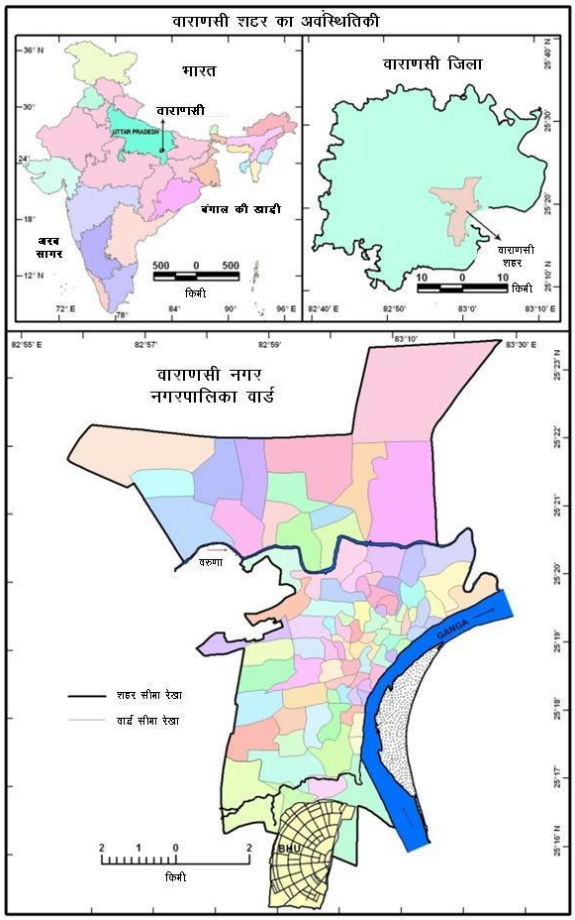

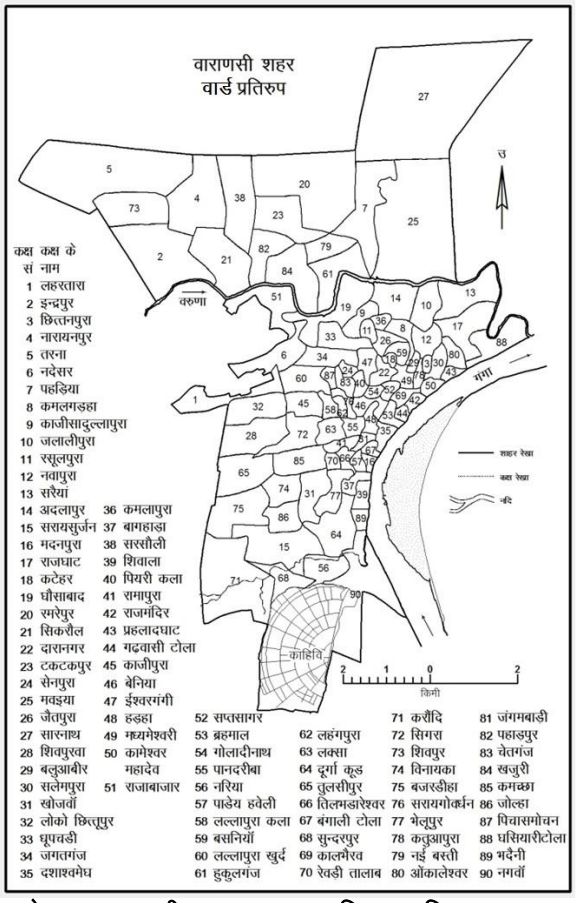

स्त्रोत : वाराणसी शहर नगर पालिका परिषद

अध्ययन क्षेत्र गंगा नदी के मध्यवर्ती मैदान में स्थित है। इसमें पायी जाने वाली मिट्टी प्रायः जलोढ एवं उपजाऊ किस्म की है। यह मैदान हिमालय से निकली नदियों द्वारा लायी गयी नवीन जलोढ मिट्टी से बना हैं। अपवाह तंत्र के रूप में गंगा नदी एवं वरूणा नदी तथा अस्सी धारा एवं कई छोटे–छोटे मौसमी नालें यहां मौजूद है। शहर की जलवायु मानसूनी प्रकार की है जो उष्णार्द्र एवं स्वास्थ्यप्रद हैं। अध्ययन क्षेत्र का औसत वार्षिक तापमान 25.82^0 सेल्सियस तथा जनवरी माह में (सबसे अधिक ठण्ड) 7.24^0 सेल्सियस रहता है। फरवरी के बाद तापमान क्रमशः बढने लगता है और जून माह में लू चलने तक जारी रहता हैं। क्षेत्र का उच्चतम तापमान मई एवं जून माह मे सर्वाधिक क्रमशः 44.64^0 एवं 45.47^0 सेल्सियस रहता है। जनवरी माह में न्यूनतम तापमान के कारण यहाँ पाला एवं कुहरा पड़ता है तथा मध्य जून के बाद वर्षा प्रारम्भ हो जाने के कारण जुलाई माह में अधिकतम तापमान 38.68^0 सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 24.14^0 सेल्सियस रहता हैं।

वाराणसी शहर में जनसंख्या वृद्धि

बीसवी सदी के प्रारम्भ (1901) में वाराणसी शहर में 2,26,105 जनसंख्या थी जो त्वरित गति से बढ़कर 2001 में 10,91,918 हो गयी (तालिका 1)। यदि दशकीय जनसंख्या वृद्धि क्रम पर ध्यान दें तो यहॉ सन् 1901 की तुलना में 1911 में यहाँ की जनसंख्या घटकर 2,17,012 हो गई। इस प्रकार वाराणसी शहर में 1901–11 दशक में कुल आबादी में 4.02 प्रतिशत का ह्रास हुआ।

जो इस अवधि में उत्तर प्रदेश के जनसंख्या ह्रास 9.0 प्रतिशत से अधिक है। पुनः 1911–21 दशक में जनसंख्या ह्रास वाराणसी शहर में 2.89 प्रतिशत तथा प्रदेश में 0.60 प्रतिशत हुई। 1921–31 के दशक में इस शहर में जनसंख्या वृद्धि दर 4.46 रही जो प्रदेश की वृद्धि दर का तकरीबन एक तिहायी है तथा भारत का एक चौथाई। 1941–51 दशक में जनसंख्या वृद्धि की दर अपेक्षाकृत मन्द रही क्योंकि सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रारम्भ हुआ। इस समय तक पुरानी सामन्ती प्रथा धीरे–धीरे विघटित हो चुकी थी तथा मानव जीवन–यापन के लिए आवश्यक सुविधायें लगभग सुलभ होने लगी थी। इस अवधि में क्षेत्र चेचक, मलेरिया, हैजा, प्लेग आदि बीमारियों से भी ग्रस्त रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं में प्रगति तथा अन्य सुविधाओं की उपलब्धता के कारण सम्पूर्ण जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने लगी। तालिका से स्पष्ट है कि 1941 से 1981 के मध्य जनसंख्या में त्वरित वृद्धि रही जो 1951–61 में +36.82 प्रतिशत हो गयी परन्तु सन् 1961–71 में यह वृद्धि +25.54 प्रतिशत हो गई जो सन् 1971–81 दशक में 25.50 पर स्थिर रही। तदोपरान्त् जनसंख्या में क्रमशः ह्रासमान वृद्धिदर पायी गयी।

तालिका सं॰ 1: वाराणसी नगर में जनसंख्या वृद्धि (1901 से 2001)

वर्ष	वाराणसी			उत्तर प्रदेश	भारत
	जनसंख्या	दशकीय वृद्धि	दशकीय वृद्धि प्रतिशत	दशकीयवृद्धि प्रतिशत	दशकीयवृद्धि प्रतिशत
1901	2,26,105	-	-	-	-
1911	2,17,012	-9,093	-4.02	-9.00	0.36
1921	2,10,745	-6,267	-2.89	0.60	8.26
1931	2,20,143	+9,398	4.46	12.80	19.12
1941	2,78,955	+58,812	26.72	26.00	31.97
1951	3,69,799	+90,844	32.57	22.90	41.40
1961	5,05,952	+1,36,153	36.82	9.90	26.41
1971	6,35,175	+1,29,223	25.54	30.68	38.23
1981	7,97,162	+1,61,987	25.50	60.62	46.14
1991	9,29,270	+1,32,108	16.60	38.73	36.46
2001	10,91,918	+1,62,648	17.50	25.10	31.48
2011	11,98,491	+1,06,573	9.76	28.80	31.80

स्रोतः जनगणना हस्त पुस्तिका वारणसी, 1951, 1961, 1971, 1981, 1991, एवं जिला जनगणना कार्यालय से संगणित एवं 2001 व 2011 आकड़े सेन्सस आफॅ इडिया की वेबसाईट से प्राप्त की गयी है।

जनसंख्या वृद्धि प्रारूप

जनसंख्या आकड़ों के पूर्णरुपेण निरुपण से स्पष्ट होता है कि यद्यपि वाराणसी शहर में सामान्य रूप से जनसंख्या वृद्धि हुई है, किन्तु सम्पूर्ण कक्षों में जनसंख्या वृद्धि का एक समान प्रारूप नहीं रहा। जिसका कारण अनेक परिस्थितियों भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि से इसका प्रभावित होना है। वाराणसी शहर में 2001–11 दशक में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि मवइया वार्ड में (120.46 प्रतिशत) रही है। शहर में वार्ड स्तर पर जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप तालिका सं॰ 2 में प्रदर्शित किया गया है। मानचित्र सं. 2 में 2001–11 दशकीय जनसंख्या वृद्धि को दर्शाया गया है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि को 5 श्रेणियों में विभाजित कर विश्लेषण किया गया है।

तालिका सं॰ 2

वाराणासी नगर में जनसंख्या का दशकीय परिवर्तन (2001–11)

वृद्धि दर प्रतिशत	जनसंख्या वृद्धि श्रेणी	2001 से 2011	
		वार्ड	प्रतिशत
0 से नीचे	ऋणात्मक वृद्धि	39	43.33
0–20	निम्न	19	21.11
20–40	मध्यम	12	13.33
40–60	उच्च	13	14.44
60 से अधिक	अति उच्च	7	7.78
योग		**90**	**100.00**

स्त्रोत : जनगणना 2001, 2011 तथा व्यक्तिगत संगणन

मानचित्र संख्या : 2

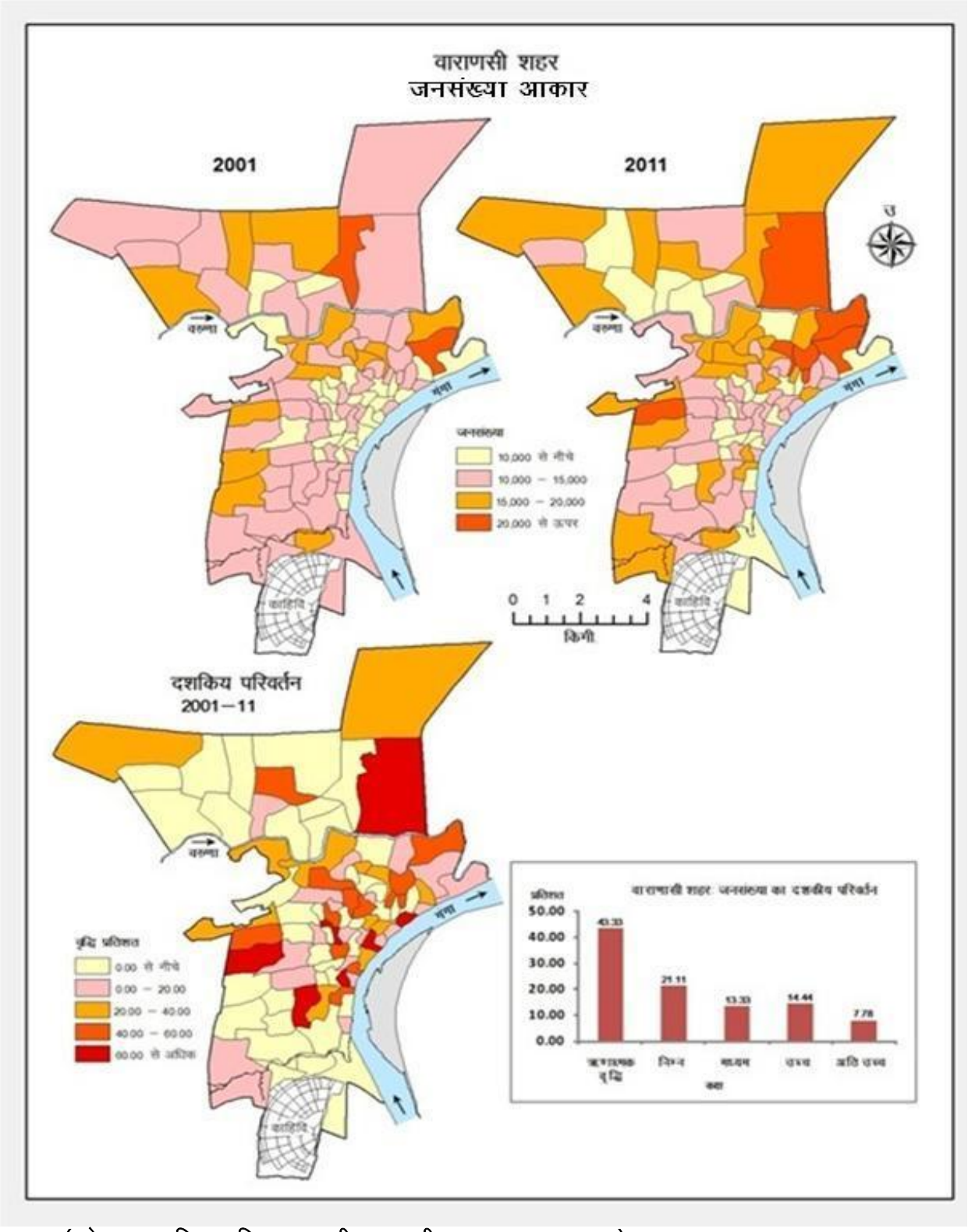

(स्त्रोतः नगरपालिका परिषद वाराणसी, भारत की जनगणना 2001, 2011)

ऋणात्मक वृद्धि

इस श्रेणी के दायरे में वाराणसी शहर के 39 वार्ड आते हैं, जहां 2001–11 में जनसंख्या की वृद्धि दर में

कमी आयी है। खजुरी वार्ड में –38.67 प्रतिशत जो सर्वाधिक है। नरायनपुर में –36.94 प्रतिशत तथा अन्य वार्डो में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी प्रदर्शित हो रही है। तिलभण्डारेश्वर वार्ड में –1.10 प्रतिशत, इन्द्रपुर में –1.51 प्रतिशत तथा कतुआपुरा में –1.63 प्रतिशत कमी दर्ज हुई है।

निम्न जनसंख्या वृद्धि

निम्न जनसंख्या श्रेणी में 19 वार्ड आते हैं जहां 0–20 प्रतिशत वृद्धि हुयी। कमच्छा वार्ड में वृद्धिदर 18.86 प्रतिशत, सेनपुरा में 18.62 प्रतिशत, सिगरा में 18.08 प्रतिशत तथा प्रहलादघाट में 1.62 प्रतिशत, कटेहर में 6.76 प्रतिशत पायी जा रही है।

मध्यम जनसंख्या वृद्धि

मध्यम जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत 12 वार्ड आते हैं जो शहर के कुल वार्ड का 13.33 प्रतिशत है। मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर (20–40 वृद्धि प्रतिशत) में आने वाले प्रमुख वार्ड सारनाथ में 37.88 प्रतिशत, कालभैरव में 37.09 प्रतिशत तथा भेलूपुरा में 37.03 प्रतिशत है। ओंकालेश्वर वार्ड में वृद्धि 22.51 प्रतिशत तथा कमलापुरा में 23.48 प्रतिशत पायी गयी है।

उच्च जनसंख्या वृद्धि

इस श्रेणी के अन्तर्गत 13 वार्ड सम्मिलित हैं, जहां जनसंख्या वृद्धि 40–60 प्रतिशत पायी जाती है। इस श्रेणी में आने वाले वार्ड हैं बंगाली टोला (59.73 प्रतिशत), टकटकपुर में 59.01 प्रतिशत, बागहाड़ा में 57.33 प्रतिशत, चेतगंज में 56.99 प्रतिशत, धूपचंण्डी में 40.85 प्रतिशत, लोको छित्तूपुर में 43.49 प्रतिशत वार्ड पायी गयी है।

अति उच्च जनसंख्या वृद्धि

अति उच्च वृद्धि दर 7 वार्ड में पायी गयी है। इन सात वार्डों में जनसंख्या वृद्धि 60.00 प्रतिशत से अधिक पायी जाती है। इनमें कुछ वार्ड ऐसे हैं जहां जनसंख्या वृद्धि अत्यधिक रही यथा मवइया वार्ड में 120.46 प्रतिशत, पाण्डेय हवेली में 98.83 प्रतिशत, कामेश्वर महादेव में 86.48 प्रतिशत व खोजवॉ में 63. 89 प्रतिशत, सरायगोवर्धन में 66.86 प्रतिशत आदि है।

अधिक जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण मुस्लिम बहुलता, अतिपिछड़े एवं अनुसूचित जातियों की अधिकता है, जिनमें परम्परागत रूढ़िग्रस्तता व्याप्त हैं। इसके साथ ही कुछ गाँवों के छोटे–छोटे बाजार केन्द्रों के रूप में विकसित होने से वहाँ जनसंख्या अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित हुई हैं।

आवासीय घनत्व

वाराणसी नगर का 2001 में आवासीय घनत्व 2,260 तथा 2011 में 2,876 प्रति किमी^{2} रहा है। 2001–11 में आवासीय घनत्व के अन्तर्गत 27.26 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गयी है। वाराणसी शहर में वार्ड के आधार पर आवासीय घनत्व की स्थिति को दर्शाया गया है (तालिका संख्या 3)। नगर के सभी वार्डों को 6 वर्ग में विभाजित कर आवासीय घनत्व को प्रदर्शित किया गया है। अति निम्न वर्ग (4,000 से कम) आवासीय घनत्व के अन्तर्गत 2001 जनगणना के अनुसार 40 वार्ड यथा सारनाथ, मवइया, तरना, राजघाट, धूपचण्डी, विनायका आदि वार्ड इस वर्ग में सम्मिलित हैं, जबकि 2011 जनगणना के अनुसार 36 वार्ड आते हैं। इस वर्ग में उल्लेखित वार्ड रमरेपुर, नगवॉ, करौंदी के साथ लहरतारा, सरैया, काजीपुरा आदि शामिल हैं। निम्न वर्ग (4,000 से 8,000) आवासीय घनत्व के अन्तर्गत 2001 में आने वाले वार्डों की संख्या 23 है जिसके अन्तर्गत नरिया, काजीपुरा, सुन्दरपुर, बागहाड़, दशाश्वमेघ, सलेमपुरा आदि कक्ष आते हैं। 2011 जनगणना अनुसार इस वर्ग के वार्डों की संख्या में गिरावट आयी है तथा केवल 14 वार्ड इस वर्ग में आते हैं। इसके अन्तर्गत पूर्ण वर्णित वार्ड के अलावा जलालीपुरा, खोजवॉ, राजघाट, के अतिरिक्त शिवाला, ईश्वरगंगी, बेनिया आदि वार्ड आते है। मध्यम वर्ग (8,000 से 12,000) आवासीय घनत्व के अन्तर्गत 2001 में 17 वार्ड हैं यथा जैतपुरा, शिवाला, लल्लापुरा कला, पियरी कला, जंगमबाड़ी आदि हैं। इस वर्ग में जनगणना 2011 के अनुसार 19 वार्ड आते हैं। काजीसादुल्लापुरा, सलेमपुरा, दारानगर, जंगमबाड़ी आदि पहली बार इस वर्ग में आते हैं।

तालिका सं. 3

वाराणसी शहर में वार्ड स्तर पर आवासीय घनत्व (2001 एवं 2011)

घनत्व प्रति किमी^{2}	वर्ग	2001		2011	
		वार्ड	प्रतिशत	वार्ड	प्रतिशत
4000 से नीचे	अति निम्न	40	44.44	36	40.00
4,000–8,000	निम्न	23	25.56	14	15.56
8000–12,000	मध्यम	17	18.89	19	21.11
12,000–16,000	उच्च	7	7.78	13	14.44
16,000 से ऊपर	अति उच्च	3	3.33	8	8.89
योग		90	100.00	90	100.00

स्त्रोत : जनगणना 2001 तथा व्यक्तिगत गणन

जनगणना 2001 के अनुसार 7 वार्ड उच्च वर्ग (12,000 से 16,000) आवासीय घनत्व के अन्तर्गत आते हैं यथा राजमंदिर, गोलादीनानाथ, कमालपुरा, प्रहलादघाट, बलुआबीर, गढ़वासी टोला, लहंगपुरा हैं। इस वर्ग में जनगणना 2011 के अनुसार 13 वार्ड आये हैं। इसमें सम्मिलित नये वार्ड सेनपुरा, तिलभण्डारेश्वर, कामेश्वर महादेव मुख्य हैं। जनगणना 2001 में तीन वार्ड है जहां अति उच्च (16,000 से अधिक) आवासिय घनत्व पायी जाता है। इस वर्ग में मदनपुरा, कटेहर, छित्तनपुरा वार्ड सम्मिलित हैं। जनगणना 2011 में ऐसे वार्डों की संख्या बढ़कर 8 हो गयी है, जिसमें सप्तसागर, गढ़वासीटोला, पाण्डेय हवेली, कमलापुरा, बलुआबीर आदि वार्ड शामिल हैं।

मानचित्र संख्याः 3

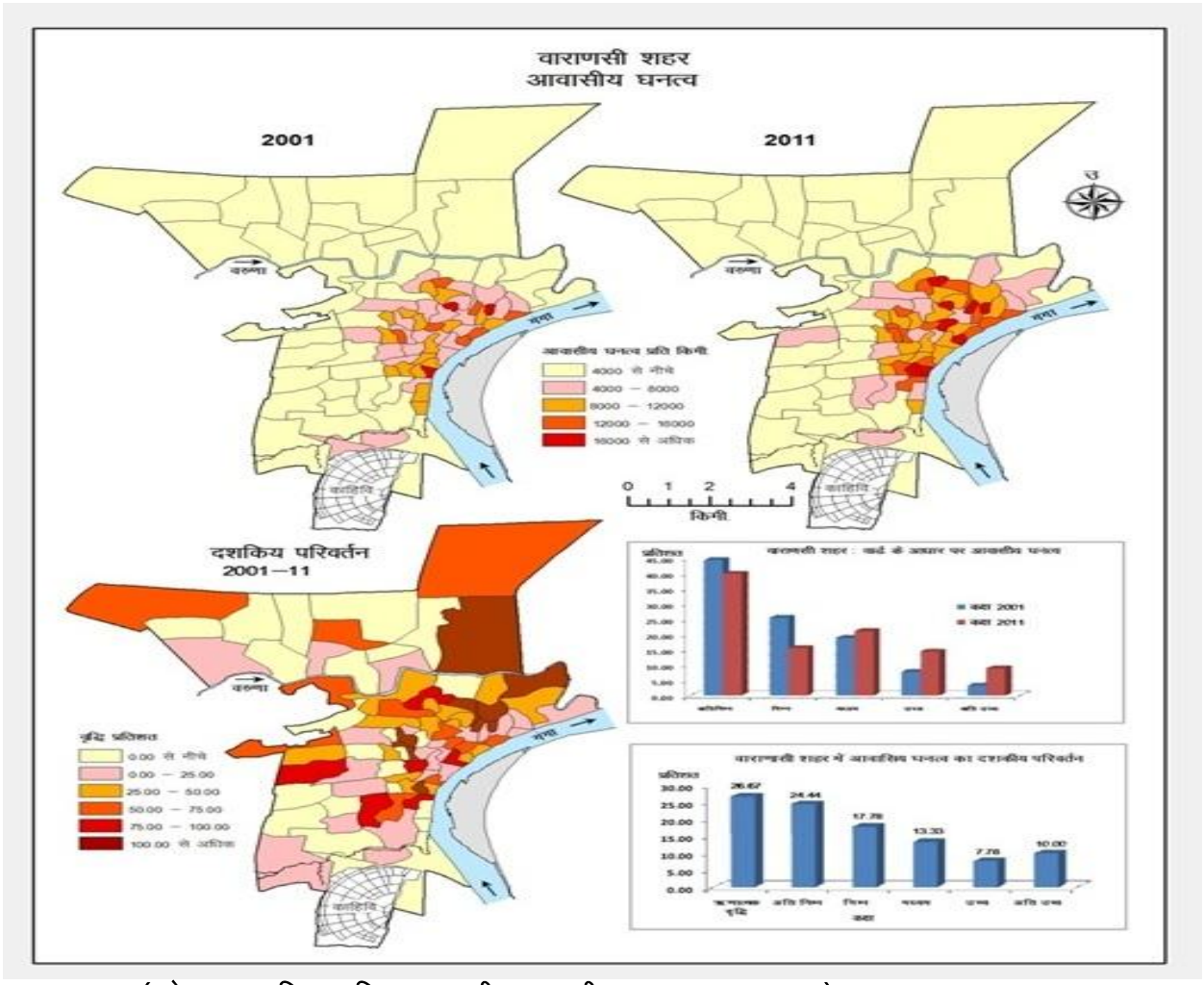

(स्त्रोतः नगरपालिका परिषद वाराणसी, भारत की जनगणना 2001, 2011)

तालिका सं॰ 4

वाराणसी शहर के आवासीय घनत्व में दशकीय परिवर्तन

वृद्धिदर प्रतिशत	वृद्धि श्रेणी	2001–11	
		वार्ड	प्रतिशत
0 से नीचे	ऋणात्मक वृद्धि	24	26.67
0–25	अति निम्न	22	24.44
25–50	निम्न	16	17.78
50–75	मध्यम	12	13.33
75–100	**उच्च**	**7**	**7.78**
100 से अधिक	**अति उच्च**	**9**	**10.00**
योग		**90**	**100.00**

स्त्रोत : जनगणना 2001 तथा व्यक्तिगत गणन

वाराणसी नगर में आवासीय घनत्व में दशक परिवर्तन (2001–2011) 27.26 प्रतिशत रहा है। तालिका संख्या 4 वाराणसी में वार्ड स्तर पर आवासीय घनत्व के दशकीय परिवर्तन को दर्शाया गया है। दशकीय परिवर्तन दर के आधार पर वार्डों को 6 वर्ग में विभाजित कर स्थानिक प्रतिरुप को दर्शाया गया है। ऋणात्मक वृद्धि (0 प्रतिशत से नीचे) के दायरे में वाराणसी के 24 वार्ड शामिल हैं। नगर में 22 वार्ड ऐसे है जहां 2001–11 दशक में जनसंख्या वृद्धि दर अतिनिम्न वर्ग (0 से 25 प्रतिशत) में आती है। निम्न श्रेणी वृद्धि दर (25 से 50 प्रतिशत) में वार्ड की संख्या 16 हो जाती है। वाराणसी में मध्यम आवासीय घनत्व वृद्धि वर्ग (50 से 75 प्रतिशत) में 12 वार्ड सम्मिलित हैं। उच्च आवासीय घनत्व वृद्धि वर्ग (75 से 100 प्रतिशत) में 7 वार्ड आते हैं। अति उच्च आवासीय घनत्व वृद्धि वर्ग (100 प्रतिशत से अधिक) 9 वार्ड आते हैं (सारणी संख्या 4)।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि वाराणसी नगर में 2001–11 दशक में सबसे अधिक वार्ड में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की गयी, जबकि निम्न, मध्यम, उच्च तथा अति उच्च आवासीय घनत्व में लगातार वृद्धि हो रही है। इससे स्पष्ट है कि आवासीय भूमि पर जनाभार में लगातार वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि सन् 2011 का आवासीय घनत्व वाराणसी शहर में 7 वार्ड में उच्च वर्ग आवासिय घनत्व (12,000 से 16,000) प्रति वर्ग किमी. था जिसमें राजमंदिर, गोलादीनानाथ, गढ़वासी टोला आदि कक्ष हैं। इस वर्ग में सन् 2011 में वार्ड की संख्या बढ़कर 13 हो गयी, जिसमें सेनपुरा, तिलभण्डारेश्वर आदि वार्ड

शामिल हो गये। सन् 2001 में तीन वार्ड ऐसे थे जो (16,000 से अधिक) अति उच्च वर्ग की श्रेणी में आते हैं यथा मदनपुरा, कटेहर, छित्तनपुरा हैं। वहीं सन् 2011 में इस श्रेणी के अन्तर्गत वार्ड की संख्या बढ़कर 8 हो गये हैं, जिसमें सप्तसागर, गढ़वासीटोला, पाण्डेय हवेली आदि वार्ड सम्मिलित हैं। मानचित्र के अवलोकल से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर उच्च व अति उच्च वर्ग में आवासीय घनत्व के अन्तर्गत गंगा से सटे वार्ड में हुए हैं। आवासीय घनत्व के दशकीय परिवर्तन (2001–11) प्रतिरुप से यह ज्ञात होता है कि ऋणात्मक वृद्धि 0 प्रतिशत से नीचे वाराणसी शहर के 24 वार्ड शामिल हैं। जबकि उच्च घनत्व के 7 वार्ड और अति उच्च आवासीय घनत्व वर्ग में 9 वार्ड सम्मिलित हो रहे हैं। इस प्रकार दशकीय परिवर्तन प्रतिरुप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि यहां केवल गंगा से सटे केन्द्र के वार्ड की ओर ही नहीं वरन् अन्य वार्ड में भी दशकीय आवासीय परिवर्तन अधिक रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. चन्दशेखर, 1974, इण्डीयाज पापुलेसन प्राब्लमस एण्ड पालीसीज इन एशियाज पापुलेसन प्राब्लम्स एलाइड पब्लिसर्स, मुम्बई
2. फारुक, उमर, 2010, ग्रामणी स्वास्थ्य सेवाओं के बदलते आयाम, कुरुक्षेत्र, अंक 4 (फरवरी), पृष्ठ 3–4।
3. मोदी, एम॰के॰, 2012, ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार हेतु उठाए गए कदम, *कुरुक्षेत्र,* अंक 10 (अगस्त), पृष्ठ 25।
4. मुखर्जी, ए॰, 1966, इकोनामिक रीव्यू, जुलाई, पृ॰ 15
5. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, 2009–10, वार्षिक रिपोर्ट, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ सं॰ 15–17।
6. सीटी डेवलपमेण्ट प्लान फार वाराणसी अण्डर जवाहरलाल नेहरु नेशनल अरबन रीनिवल मिसन (जे एन एन यू आर एम) रेपिड असेसमेण्ट रिपोर्ट, मई 2006
7. स्त्रोत : जनगणना 2001 तथा व्यक्तिगत गणक